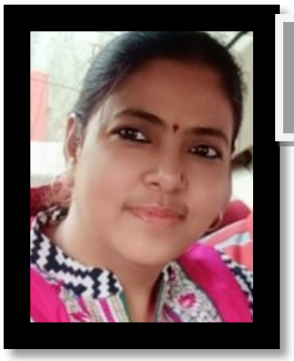

प्रो. कंचन शर्मा

प्रोफेसर हिन्दी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय
काँचीपुर, इम्फाल

तालाब में कंकड़

जन्म से मृत्यु तक का गणित
आज तक मेरी समझ से बाहर है ।
मेरे इस दुनिया में आते ही छा गया
मातम
तुम्हारे आते ही बजी थालियां,
बंटी मिठाई,
मां को मिला एक जोड़ा कंगन
और-
बाबू जी की मूंछ थोड़ी और ऊंची हो
गई।
तुम फिस्सडे रहे हमेशा, मैं अव्वल
फिर भी-
कर दी गई मेरी शादी
वैतरणी पार कर ली पिता ने ।
कोख एक ही थी हम दोनों की,
बीज एक ही था हमारा
फिर मैं ' भार' तुम ' वंशधर' कैसे?
मैं मनहूस, कुलटा विधवा;
तुम कुछ भी नहीं?
मैं कब सजूं,कब संवरू
मैं लाल ओढ़ू या सफेद
मैं हंसू या रहूं मौन,
मैं जीयूं या मरूं
हुआ सब कुछ तय तुमसे!
नहीं.....
सब कुछ तय किया गया तुम्हारे
अनुसार ।
मेरे खुशियां,सपने, जीवन,
मेरा स्वाद, श्रृंगार, स्वाधीनता भी,
तुम्हारी रजा की रही मोहताज!
मैं सादा भात खाऊं या मछली,
मैं लहसुन- प्याज खाऊं या रखूं
उपवास
मैं महावर लगाऊं या-
आंखों से उजाड़ दूं सपने,
यह भी तुमसे ही तय हुआ।
आश्चर्य!
कभी किसी ने नहीं देखा तुम्हें
सफेद या लाल पहनते मेरी वजह से ।
मेरी वजूद में तुम ' घुन ' हो
सदियों से इसे ढो रही हूं
संस्कार, परंपरा पवित्रता के
भव्य रूप में ।
मैं समझ नहीं पाती
चुटकी भर सिंदूर कैसे-
मुझे सहारा दे सकता है?
मंगलसूत्र की काली पट्टी कैसे हो
सकती है मेरी सुरक्षा
की गारंटी;
कैसे एक व्यक्ति मात्र,
मेरा जीवन निर्णायक हो सकता है?
पुरूष- पुरूष- पुरूष!
किले की दीवार बना दी है
मेरी चारों ओर
इस कालापानी से मुक्त होने की-
मेरी हर कोशिश, अब तक नाकाफी है
क्योंकि.....
एक षड़यंत्र रच रखा है
' त्रास' को तुमने।
परदादी से मां तक मैंने- भय देखा है ।
है ना बड़ा अचम्भा!
तुमसे बंधकर मैं सुरक्षित
तुमसे मुक्त होकर फिर-
तुम्हारे ही कारण असुरक्षित
आतंक का यह गुब्बारा
मैं फोड़ूंगी ।
तुम्हारे भय से डरती नहीं मैं;
एक दस्तक दूं मैं
एक पहल,
तुम्हारे तालाब में
एक कंकड़।।